Unit -5

Unit -5

बच्चे और व्यक्तित्व विकास

• व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एरिक्सन के सिद्धांत का विशेष संदर्भ

एरिक्सन के सिद्धांत के अनुसार पूरा जीवन विकास के 8 चरणों से होकर गुजरता है। प्रत्येक चरण में एक विशिष्ट विकासात्मक मानक होता है जिसे पूरा करने में आनेवाली समस्याओं का समाधान करना आवश्यक होता है। एरिक्सन के अनुसार समस्या कोई संकट नहीं होती है। बल्कि संवेदनशील और सामर्थ्य है को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण बिन्दु होता है। समस्या का व्यक्ति जितनी सफलता के साथ समाधान करता है उनका उतना ही अधिक विकास होता है। एरिक्सन के इस सिद्धांत को मनोसमाजिक विकास का सिद्धांत भी कहते हैं। एरिक्सन द्वारा वर्णित सिद्धांत के विभिन्न चरण निम्नलिखित है —

i) विश्वास बनाम अविश्वास (0-1 वर्ष) :- जब शिशु की देखभाल अच्छी प्रकार होती है तो उसके अन्दर विश्वास की भावना जगती है और अपने आप सुरक्षित महसूस करता है। इसके विपरीत जब बच्चों में ऐसी भावना का अभाव होता है तो उसके अंदर अविश्वास की भावना पैदा होती है।

ii) स्वाधीनता बनाम शर्म (1 से 3 वर्ष) :- बच्चों को अभिभावक को चाहिए कि अपने बच्चे को अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। ऐसा करने से उनमें स्वाधीनता की भावना विकसित होगी। ऐसा नहीं होने से बालकों में अपनी योग्यता के संबंध में शंका उत्पन्न हो जाए।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) पहल बनाम अपराध बोध (3-6 वर्ष) :- यदि बालकों को प्रयोग करने और स्व कार्य करने की स्वतंत्रता होती है तो उसमें पहल करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। यदि उन पर प्रतिबंध लगाये जाते हैं तो दोष की भावना पनपती है।

iv) परिश्रम बनाम हीनता (6-11 वर्ष) :- यदि बालक को प्रोत्साहन मिलता है तो परिश्रमी हो जाता है। इसके विपरीत यदि उसके प्रयास विफल होते हैं तो उनमें हीन भावना उभरती है।

v) पहचान बनाम भूमिका भ्रान्ति (12-18 वर्ष) :- इस समय व्यक्ति को इन प्रश्नों का सामना करना पड़ता है कि वह कौन है? अगर वह जैसे व्यवसायी और रोमांटिक व्यक्ति की भूमिका का स्वत: पता चल जाता है। यदि इसके सकारात्मक रास्ते का पता लगाने का मौका न मिले तो पहचान की भ्रान्ति उत्पन्न होती है।

vi) घनिष्ठता बनाम अकेलापन (18-35 वर्ष) :- युवा अपने अभिज्ञान को दूसरों के साथ मिला देने का इच्छुक होता है। वह घनिष्ठता के लिए तैयार हो जाता है इस स्तर का संकट है कि घनिष्ठता का अनुभव नहीं होने पर अकेलापन की भावना उत्पन्न होती है।

vii) उत्पादकता बनाम स्थिरता (35-64 वर्ष) :- उत्पादकता प्राथमिक रूप में नयी पीढ़ी को निर्देश देने से संबंधित होती है जो इस प्रक्रिया से अलग रहते हैं, उसमें ठहराव। स्थिरता आ जाती है।

viii) संपूर्णता बनाम निराशा (65 से मृत्यु तक) :- इस अवस्था में व्यक्ति यह स्वीकार लेता है कि जैसा भी हो उसके जीवन का चक्र है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है। कहने का तात्पर्य है कि वह अपने जीवन से संतुष्ट रहता है। इसके विपरीत व्यक्ति जब संतुष्ट नहीं होते हैं तो उनके जीवन में घोर निराशा का भाव उत्पन्न होता है।

- बच्चों में भावनात्मक / संवेगात्मक विकास का पहलू : जॉन बाल्बी का सिद्धांत एवं अन्य विचार

जॉन बॉल्बी का सिद्धांत –

[लगाव एक प्रकार का भावनात्मक संबंध है जो दो व्यक्तियों को आपस में बाँधता है। यह संबंध समय और दूरी के बावजूद बना रहता है। लगाव की भावना तब और प्रबल हो जाती है जब अभिभावक शिशु के क्रियाओं पर प्रतिक्रिया देते हैं तथा उसे सहज महसूस कराते हैं। जब शिशु को उनकी आवश्यकता पड़ती है खासकर तब जब वह बीमार हो, घायल हो या फिर वह संवेगात्मक रूप से दु:खी हो।

लगाव शिशु के संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास के लिए बहुत आवश्यक है। यदि शिशु के आवश्यकताओं की पूर्ति सही समय पर होती है तो वो विश्वास करना सीख लेता है। और खुद को सुरक्षित और मूल्यवान महसूस करने लगता है।]

बॉल्बी का सिद्धांत – जॉन बॉल्बी का यह सिद्धांत लगाव की गहराई को समझती है इसलिए जॉन बॉल्बी ने एक मनोसमीक्षक के नजरिये से शिशु और पालनहार के संबंध को समझाने की कोशिश की। जॉन

Scanned by CamScanner

बॉल्बी द्वारा स्थापित सिद्धांत लगाव के विकास की चार अवस्थाओं पर आधारित है —

i) लगाव से पहले की अवस्था (जन्म से डेढ़ माह) —

इस दौरान शिशु पकड़ना, मुस्कुराना, रोना, व्यस्कों के आँखों में आँखें डालकर देखना या नजर मिलाना, इन क्रियाओं को संकेतों की तरह उपयोग करके आस - पास के लोगों के साथ संबंध स्थापित करते है। बच्चे को जो अच्छा लगता है जब उन्हें कोई गोद में लेता है, पीठ थपथपाता है, लोरी सुनाता है या प्यार से कुछ कहता है।

ii) लगाव निर्माण की प्रक्रिया की अवस्था (डेढ़ माह से 6-8 महीने तक) —

यह वह समय है जब शिशु परिचित, पालनहार या माँ और अन्य व्यस्कों में फर्क को पहचानते है जो उनके व्यवहार में अंतर करते हैं फिर भी उनसे जुदा किये जाने पर वे सख्त प्रतिरोध नहीं करते लेकिन बच्चा माँ या पालनहार के उपस्थिति में ज्यादा स्वाभाविक एवं सहज महसूस करते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) लगाव निर्माण पूर्ण होने की अवस्था (6-8 माह से 1-2 वर्ष तक) —
इस अवस्था में साफ तौर पर शिशु पालनहार का नाता प्रस्तुत होता है। इस उम्र के बच्चे समझने लगते हैं कि वस्तु के आँखों से ओझल होने के बावजूद वस्तु का अस्तित्व बरकरार रहता है। गायब होने से उनके अभिभावक रक्षक पालनहार नष्ट नहीं हुए हैं। इसी कारण उनके इधर-उधर जाने पर रोने लगते हैं और उनको साथ रखने की कोशिश करते हैं। उनका पीछा करके उनके ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगते हैं।

iv) विपरीत संबंध का निर्माण (1-2 वर्ष और उसके बाद) —
2 वर्ष के उम्र के बच्चे भाषा और भाव की प्रस्तुती में दक्षता हासिल करने लगते हैं जिससे वे समझने लगते हैं कि माता-पिता के आने में देरी का कोई कारण होगा और किसी वजह से ही वे बच्चों से दूर भी जाते हैं इससे वे व्यस्कों के आस-पास न होने से उतने विचलित नहीं होते और न ही उनके तुरंत आने पर रोते हैं। एक और अंतर जो बच्चे के

Scanned by CamScanner

व्यवहार में देखे जाते हैं वह यह है कि बड़ों का पीछा करने के बजाय वे इस उम्र में उन्हें रोकने के नये तरीकों को अपनाते हैं। जैसे - मौखिक रूप से जिद्द करना

11/06/19, Tuesday

संज्ञानात्मक विकास :—

संज्ञान का अर्थ उन मानसिक प्रक्रियाओं तथा उन उत्पादों से है जिनसे ज्ञान का निर्माण होता है। इसके अंतर्गत विभिन्न मानसिक प्रक्रियाएं आती हैं जैसे - याद रखना, संकेतीकरण, योजना बनाना, समस्या समाधान, वर्गीकरण कर पाना, कल्पनाएं कर पाना, नयी - नयी चीजों एवं संकल्पों का सृजन करना। मनुष्य के जीवन में संज्ञानात्मक विकास का विशेष महत्व है। इसी के कारण मनुष्य स्वयं को वातावरण के अनुरूप ढाल पाते हैं।

⇒ जिन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास —

बाल विकास के क्षेत्र में जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का विशेष योगदान है। स्विटजरलैण्ड निवासी 'जिन पियाजे' प्राणी विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त की। पियाजे के अनुसार बच्चे

शुरुआत से ही बड़े लोगों की भाँति संकल्पनाओं को नहीं समझते, बल्कि वह अपने प्रत्यक्षण और अपनी पेशीय गतिविधियों के द्वारा संकल्पनाओं का निर्माण एवं उसमें संशोधन करते हैं।

⇒ संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएँ —

पियाजे के अनुसार, शिशु के खोजपूर्ण व्यवहार से लेकर अमूर्त तर्कसंगत तक सभी बच्चे चार अवस्था से गुजरते हैं।

i) संवेदी पेशीय अवस्था (Sensor motor stage) — (0 - 2 वर्ष)

प्रारंभिक काल को संवेदी पेशीय अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में बच्चे अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा देखना, सुनना, छूना, चखना, सूंघना, चलना आदि क्रियाओं किसी भी पेशीय गतिविधि द्वारा सीखता है। इस अवस्था में बच्चों में वस्तु के स्थायित्व का विकास होता है। इसका अभिप्राय है कि बच्चे यह समझने लगते हैं कि यदि कोई वस्तु उसके सामने उपस्थित नहीं है तो भी उसका अस्तित्व रहता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Tuesday

Date 18/06/1

Page

(ii) पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था (~~Formal~~ Pre-Operational Stage) — (2 - 7 वर्ष)

संवेदी पेशीय अवस्था के अंत तक बच्चे बहुत - सी क्रियाएँ करने लगते हैं। इस अवस्था में बच्चे मानसिक संक्रिया करना प्रारंभ करते हैं। मानसिक संक्रिया से अभिप्राय सोच के साथ क्रिया करना एवं मन - मस्तिष्क में समस्या को हल करने का प्रयास करना। पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था में बच्चे निपुणता की ओर बढ़ते हैं परंतु वह भी पूर्ण रूप से मानसिक संक्रियाओं में निपुण नहीं होते इसलिए इसे पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था कहते हैं।

इस अवस्था में बच्चे हर कार्य शारीरिक क्रियाओं से ना करके सांकेतिक मानसिक क्रियाओं द्वारा करने का प्रयास करते हैं। इस अवस्था में बच्चे शब्द, संकेत, चिह्न, हाव - भाव आदि का प्रयोग कर पाता है।

(iii) मूर्त - संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage) - (7 - 11 वर्ष)

मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में बच्चे वातावरण में उपस्थित तार्किक अवस्था को समझ पाते हैं। वह यह समझ पाते हैं कि आकृति या आकार में परिवर्तन के बावजूद चीजों की स्थिति समान रहती है तथा यह परिवर्तन चरणों को अंत से प्रारंभ करके भी देख सकते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

इस अवस्था में एक और महत्त्वपूर्ण क्षमता का विकास होता है वह है वर्गीकरण करने का। बच्चे एक विशेषता के आधार पर चीजों को समूह में बाँट सकते हैं। जैसे – मुर्गी, शुतुरमुर्ग आदि सभी पक्षियों की श्रेणी में आते हैं। वे चीजों, व्यक्तियों को आसानी से एक क्रम में (छोटे से बड़े) लगा सकते हैं जिसे क्रमबद्धता कहते हैं। उदा० के लिए, यदि राम, श्याम से लंबा है और श्याम, हीना से लंबा है तो राम हीना से लंबा है।

(4) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Operational Stage) (11 वर्ष से अधिक)

इस अवस्था के दौरान बच्चों में अमूर्त संक्रियाओं का विकास होता है तथा वे बहुत-सी क्रियाओं का प्रयोग एक ही समय पर कर पाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि बच्चे जिस स्थिति के बारे में सोच रहा हो उस स्थिति का अनुभव किया हो। वह मात्र कल्पना द्वारा ही उस स्थिति को समझ सकते हैं। उदा० के लिए, यदि किसान खेती करना छोड़ दे तो क्या होगा? इस अवस्था में बच्चे में निगमन, तार्किक, चिंतन का

विकास होता है। यह समस्या समाधान की एक विधि है। जिसमें बच्चे समस्या के सभी कारकों की पहचान करता है तथा निगमन विधि का प्रयोग कर समस्या का विश्लेषण करता है।

पैवलव का क्लासिकी अनुबंधन सिद्धांत — (classical conditioning)

I.P पैवलव एक रूसी वैज्ञानिक (शरीर) थे। जिन्होंने पाचन क्रिया का विशेष रूप से अध्ययन करना प्रारंभ किया और उनका यह अध्ययन इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके लिये उन्हें 1904 में 'नोबेल' पुरस्कार भी दिया गया। पैवलव ने इस अध्ययनों के दौरान लारमय अनुबंधन की घटना का अध्ययन किया और इससे संबंधित सीखने के एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसे 'अनुबंधित अनुक्रिया' सिद्धांत कहा जाता है। पैवलव ने अपने सिद्धांत का आधार अनुबंधन को माना है। अनुबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपन तथा अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित होता है। पैवलव के सीखने के इस अनुबंधन सिद्धांत को 'क्लासिकी अनुबंधन सिद्धांत' कहा जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner